धागेः सुसमाचार और व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार

सुसमाचार और व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार

डॉ. डेविड प्लैट

यदि आपके पास बाइबल है और मेरा विचार है कि आपके पास है, तो मेरे साथ रोमियों 1 निकालें। मैं जानता हूँ कि सुसमाचार प्रचार शब्द सुनते ही बहुत से लोग असहज हो जाते हैं जब आप अपने विश्वास को राहगीरों से बाँटने के बारे में सोचते हैं। आप सोचते हैं, "नहीं, मैं यह नहीं कर सकता।" मैं शुरूआत में ही आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि मैं भी उस में नहीं हूँ। मैं भी अनजाने राहगीर से अपने विश्वास को बाँटने के पक्ष में नहीं हूँ। परन्तु मेरा विचार है कि व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार में एक तस्वीर है जिसे में पुनः ढूँढ़ने की आवश्यकता है। मैं व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के बारे में आपके पहले से स्थापित कुछ विचारों को चुनौती देना चाहता हूँ।

मैं आपको मध्य–पूर्व में एक शहर की यात्रा पर ले जाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ एक पहाड़ पर खड़े होकर मध्य–पूर्व के केन्द्र में बारह लाख लोगों के एक शहर को देखने की कल्पना करें। आप गोल पहाड़ियों से घिरे हैं और उन पहाड़ियों पर छितराए हुए घर हैं, और शहर के इस मनोरम दृश्य में आप अक्षरशः बारह लाख लोगों को अपने सामने देख सकते हैं। उनमें से अधिकाँश–और अधिकाँश से मेरा मतलब है उनमें से 80–90 प्रतिशत– ने पहले कभी व्यक्तिगत रूप में सुसमाचार नहीं सुना है। न केवल यह कि उन्होंने सुना नहीं है, बल्कि इससे भी बुरा यह है कि यदि आपने उन्हें सुसमाचार सुनाने का प्रयास किया तो आपको

गिरफ्तार किया जा सकता था। आपके लिए उन्हें सुसमाचार सुनाना गैर–कानूनी है, और चाहे आपने यह खतरा उठाया और वे वे मसीह के विश्वास में आए, तो इस विशेष शहर में उनकी हत्या हो सकती है। तो सवाल यह है कि ऐसे एक शहर में आप सुसमाचार कैसे फैलाते हैं?

कुछ माह पूर्व हम वहाँ मसीह के अनुयायियों के एक अतुल्य झुण्ड के साथ कार्य कर रहे थे जिनका इस विशेष शहर में व्यवसाय है। उन्होंने बताया कि वे इस शहर में सुसमाचार को कैसे फैला रहे थे। उन्होंने कहा, "हम प्रतिदिन एक दुकान से दूसरी दुकान, एक बाजार से दूसरे बाजार, एक घर से दूसरे घर जाते हुए हर जगह मुसलमान लोगों से बातचीत करते हैं।" उन्होंने कहा, "हम हर दिन मुसलमानों के सामने परमेश्वर के राज्य के धागों को सीलना चाहते हैं। हम राज्य की दयालुता, राज्य की नम्रता, राज्य के तरस, राज्य के प्रेम, परमेश्वर के राज्य की करूणा के धागों को सीलना चाहते हैं। हम उनके सामने परमेश्वर के राज्य के धागों को सीलना चाहते हैं। और हमारी प्रार्थना है कि जब हम इन मुसलमानों के सामने परमेश्वर के राज्य की विशेषताओं को जीते हैं, तो एक दिन परमेश्वर इन सारे धागों और रंगों से बनी परमेश्वर के राज्य की खूबसूरत रजाई को देखने के लिए उनकी आँखों को खोलेगा। चूंकि हम मौखिक रूप से सुसमाचार नहीं सुना सकते हैं, तो हम प्रार्थना करते हैं कि जब हम उनके सामने परमेश्वर के राज्य की तस्वीर को जीकर दिखाते हैं तो हमें उस तस्वीर को एक साथ मिलाने और सुसमाचार को बाँटने का अवसर मिलेगा।" यह हो रहा है।

मैं एक परिवार में एक महिला से मिला जिसने परमेश्वर के राज्य को देखा था। उसने एक–एक दिन परमेश्वर के राज्य के धागों को अपनी आँखों के सामने सीलते

हुए देखा था। वह सवाल पूछने लगी, और बड़ा खतरा उठाकर वह अन्ततः मसीह के विश्वास में आ गई। क्योंकि यदि उसके परिवार को पता चल जाता, तो निःसन्देह उसके परिवार द्वारा उसे मार दिया जाता। परन्तु जब उसने प्रतिदिन अपनी आँखों के सामने राज्य के धागों की सिलाई को देखा तो उस संस्कृति के बीच में मसीह की खूबसूरती को देखने के लिए उसकी आँखें खुल गईं।

अतः मैं चाहता हूँ कि हम यह करें। उस तस्वीर को लें, कल्पना करें कि कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति एक सप्ताह के लिए पूरी तरह व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार में लगा रहेगा। इस अर्थ में व्यक्तिगत सुसमाचार नहीं कि हम सब पुस्तिकाओं से लदे हों और हमारे दिमाग में अतुल्य बातें भरी हों। बल्कि, हम बच्चों के साथ, अपने पड़ोसियों के साथ, और अपने सहयोगियों के साथ अवसरों की खोज में रहेंगे कि उनके सामने दिन–प्रतिदिन सुसमाचार के धागों को बुन सकें। हम ऐसे अवसर खोजने का प्रयास नहीं कर रहे हैं जब हम किसी पर झपटकर एक घण्टे तक उसके सामने सुसमाचार की प्रस्तुति दें। इसके विपरीत, हम लोगों को सुसमाचार की तस्वीरों को संकेत देने के लिए दैनिक वार्तालापों का प्रयोग कैसे कर सकते हैं। सामान्य वार्तालाप में सरल तरीके, और साथ हम प्रार्थना कर रहे हैं कि परमेश्वर सहयोगी की आँखें खोले, पड़ोसी की आँखें खोले, बच्चों की आँखें खोले, माता–पिता की आँखें खोले, कि वे सुसमाचार की खूबसूरती को देख सकें। परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए कि परमेश्वर हमें उन रंगों को सुसमाचार में एक साथ मिलाने का अवसर देगा, कि हम लोगों को पहली बार मसीह की खूबसूरती से परिचित करा सकें। और मैं चाहता हूँ कि ऐसी तस्वीर के साथ हम इस श्रृंखला को आरम्भ करें। यह लघु चार सप्ताह की श्रृंखला है। मैं चाहता हूँ कि हम ऐसे लोग बनें जो लोगों का मसीह से परिचय करवाने के बारे में चिन्ता करते हैं, जो मसीह की खूबसूरती और मसीह

की महिमा के लिए लोगों का उससे परिचय करवाने के लिए अपने जीवनों को दे देने के बारे में गम्भीर हैं।

और हम इसे इस प्रकार से करेंगे। मैं चाहता हूँ कि हम रोमियों से आरम्भ करें और मैं चाहता हूँ कि अगले चार सन्देशों में हम पाँच प्राथमिक सुसमाचार 'धागों' को खोजें। सुसमाचार के धागे जो पूरी रोमियों की पुस्तक में बुने हुए हैं, जिन्हें हमारे वार्तालापों के कपड़े में बुना जा सकता है, जिन्हें प्रतिदिन के आधार पर हमारे विचारों के कपड़े में बुना जा सकता है। इस प्रयास और प्रार्थना में, कि परमेश्वर इन धागों का प्रयोग करेगा और जहाँ हम रहते हैं वहाँ दैनिक आधार पर हमारे मुँह से लोगों का मसीह से परिचय करवाएगा। हम रोमियों 1 से आरम्भ करेंगे, जो मेरे विचार में व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के किसी भी वार्तालाप का आरम्भिक बिन्दू है। इससे पहले कि हम इन धागों मे घुसें और देखें कि वे हमारे जीवनों में कैसे होंगे, मैं चाहता हूँ कि हम इस श्रंखला के आरम्भ में रूकें और अपने हृदयों के बारे में सोचें। आरम्भ से ही मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरे विचार में कलीसिया पर—मसीह के अनुयायी पर—व्यक्तिगत सुसमाचार के लिए दबाव डालने का सर्वोत्तम तरीक उन्हें अपराध—बोध के तले दबाना नहीं है। आप में से जो लोग कुछ समय से मसीही हैं वे जानते हैं कि ग्लानि अक्सर सुसमाचार प्रचार के लिए प्राथमिक साधन, प्राथमिक प्रेरणा होती है। विचार यह है, "थोड़ा बुरा महसूस होते ही वे इसे करेंगे।" यह इस प्रचार का लक्ष्य नहीं है। इसकी बजाय मैं चाहता हूँ कि हम अपने हृदयों को देखें। मेरे सबसे पसन्दीदा प्रचारकों में से एक, जॉन स्टॉट ने कहा, "आज व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की सबसे बड़ी अकेली रूकावट हमारे अपने आत्मिक अनुभव की गुप्त निर्धनता है।" दूसरे शब्दों में, यह हृदय का विषय है, और जब हमारे हृदय सुसमाचार द्वारा विवश होते हैं, तो यह व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार में

हमारी भागीदारी को प्रभावित करता है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम रोमियों की पुस्तक को लिखने वाले प्रेरित पौलुस के हृदय के आधार पर अपने हृदयों को जाँचें।

अध्याय 1 के पहले भाग में, पौलुस हमें सम्पूर्ण पुस्तक का एक संक्षिप्त विवरण देता है। मैं इस प्रचार में वहाँ से आरम्भ करना चाहता हूँ, और फिर आने वाले प्रचारों में, रोमियों 1–8 अध्यायों को समझाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम उन अध्यायों में बुने हुए सुसमाचार के धागों को देखें।

व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के लिए आधार...

रोमियों की पुस्तक, विशेषतः ये प्रथम आठ अध्याय पवित्रशास्त्र में कहीं भी दिए गए सुसमाचार के धर्मविज्ञान में सर्वाधिक अतुल्य हैं। यह गहन है, और आज मैं चाहता हूँ कि हम देखें कि पौलुस सुसमाचार को सुनाने के लिए इतना विवश क्यों था। मेरे साथ रहें, रोमियों 1:1, मैं चाहता हूँ आप सुनें वह रोम की कलीसिया को क्या लिखता है। उसके दिल को सुनें। मैं चाहता हूँ आप इस परिच्छेद में उसके हृदय को महसूस करें।

पद 1:

> *पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए अलग किया गया है*

जिसकी उसने पहले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में, अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी; वह शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। उसके हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें, जिनमें से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिए बुलाए गए हो।

उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं : हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

पहले मैं तुम सब के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है। परमेश्वर जिसकी सेवा मैं अपनी आत्मा से उसके पुत्र के सुसमाचार के विषय में करता हूँ, वही मेरा गवाह है कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण करता रहता हूँ, और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में विनती करता हूँ कि किसी रीति से अब तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सफल हो।
क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ; अर्थात् यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में होऊँ, तो हम उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में और तुम में है, एक दूसरे से प्रोत्साहन पाएँ। हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैं

ने बार–बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे दूसरी अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रोका गया।

मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ। अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ।

अगले दो वचन इस सम्पूर्ण पुस्तक का सार हैं। पौलुस कहता है,

क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।" (रोमियों 1:1–17).

पौलुस का हृदय, रोमियों 1:1–17. इससे पहले कि हम व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार पर कोई विचार–विमर्श करें, इससे पहले कि हम सोचें कि व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार हमारे जीवनों में कैसा दिखेगा, मैं पौलुस के हृदय के आधार पर आपको चार अनिवार्य आधार दिखाना चाहता हूँ। ये आधार क्या हैं?

हमें याद रखने की आवश्यकता है कि हम किस के हैं

पहला आधार, सबसे पहले, हमें याद रखने की आवश्यकता है कि हम किस के हैं, हम किस के हैं। सतह पर, रोमियों 1, विशेषतः 1–17, पौलुस का परिचय है। ऐसा

प्रतीत होता है कि वह बता रहा है कि वह कौन है, परन्तु यह इससे कहीं गहरा है। जब आप इसमें देखते हैं, आप देखते हैं कि रोमियों 1 में पौलुस की सम्पूर्ण पहचान इस बात से है कि मसीह कौन है, और मसीह ने उसके जीवन में क्या किया है। ″पौलुस, यीशु मसीह का दास,″ ″मसीह द्वारा बुलाया गया,″ ″मसीह द्वारा अलग किया गया,″ ″उसके द्वारा हमें मिली;″ ये सारी बातें जो पौलुस के व्यक्तित्व को बनाती हैं, वे मसीह के व्यक्तित्व पर निर्भर हैं। उसके पास जो कुछ है वह मसीह के कारण है। इस परिचय में स्वयं के बारे में उसका सम्पूर्ण विवरण इस तथ्य पर आधारित है कि वह मसीह का है। यहाँ कुछ याद दिलाया गया है। यहाँ पद 1 में ही हम एक प्रचार कर सकते हैं। पद 1 के आधार पर मैं चाहता हूँ आप याद रखें कि हम किस के हैं।

पहला, हम सुसमाचार के दास हैं। पौलुस स्वयं को मसीह यीशु का दास बताता है। अब हमारे लिए यह कोई महत्वपूर्ण वाक्यांश नहीं है, परन्तु यदि आप इसे पहली सदी के रोम में पढ़ते, तो यह पौलुस का अपने बारे में अत्यधिक महत्वपूर्ण वर्णन होता। वह शब्द, ″दास″– इस पर आप निशान लगा सकते हैं और पास में टिप्पणी लिख सकते हैं– मूल भाषा में यह एक बड़ा शब्द है। यह *डूलोस* कहलाता है, जिसका अर्थ है ″गुलाम।″

पहली सदी के रोम में लाखों गुलाम थे। उन्हें संपत्ति माना जाता था। वे किसी स्वामी के होते थे। वे एक स्वामी के होते थे। मैं चाहता हूँ आप उसकी गम्भीरता को समझें जो पौलुस यहाँ कह रहा है। पहली सदी के रोम में होने की कल्पना करें। वहाँ एक देश की राजधानी जिसे रोमियों ने जीत लिया है, में यीशु नामक एक निर्धन बढ़ई है। इस निर्धन यहूदी को क्रूस पर चढ़ा दिया गया। उसे एक क्रूस

पर मार दिया जाता है, मृत्यु का सबसे अपमानजनक, घटिया तरीका। सबसे दुष्ट रोमी अपराधी को भी इस तरह नहीं मारा जाता था। यह लज्जा की चरम सीमा थी। पिलातुस नामक रोमी राज्यपाल द्वारा इस निर्धन बढ़ई ऐसी मौत की सजा सुनाई जाती है। और पौलुस उसी पृष्ठभूमि में है, रोम के लिए पत्री लिखते हुए कह रहा है, "वह निर्धन बढ़ई जो तुम्हारी जानकारी में सर्वाधिक लज्जाजनक मौत मरा वह जीवित है और मैं उसका गुलाम हूँ। वह मेरा स्वामी है। वह मुझ पर राज्य करता है।" यह अजीब है, भ्रम प्रतीत होता है। मैं एक ऐसे व्यक्ति का गुलाम हूँ जो क्रूस पर मारा गया, उस समय इसका कोई अर्थ नहीं था।

परन्तु पौलुस अपना वर्णन इसी प्रकार करता है। अगली पुस्तक 1 कुरिन्थियों 6:19–20 में वह यही कहता है, "(हम) अपने नहीं हैं। (हमें) दाम देकर मोल लिया गया है।" 1 कुरिन्थियों 3:5 में वह एक शब्द का प्रयोग करता है जिसका अनुवाद हमारी बाइबल में "सेवक" किया गया है, पर उस शब्दा *डाइकोनिया* का शाब्दिक अर्थ है, "जो मेज पर सेवा करता है।" वह मसीह के संबंध में अपना वर्णन इसी प्रकार करता है, मेज पर सेवा करने वाले के रूप में। आप 4:1 में आएँ, वहाँ पुनः सेवक शब्द है, परन्तु यह मूलभाषा में एक अलग शब्द है जिसका अर्थ है "तल में खेने वाले।" ये वे गुलाम होते थे जो विशाल रोमी जहाज के तल में खेने का काम करते थे। यह सबसे नीचा और खतरनाक कार्य था जिसे एक गुलाम द्वारा किया जाता था। सामाजिक स्तर के अनुसार यह सबसे नीचा था। जब पौलुस अपना वर्णन करता है, तो वह इन शब्दों का प्रयोग करता है जो उस संस्कृति में अपमानजनक हैं। वह मूलतः कहता है, "मैं एक गुलाम हूँ, मैं एक सेवक हूँ, मैं मेज पर सेवा करने वाला हूँ, यीशु मसीह के संबंध में मैं जहाज के तल में खेने वालों के

समान हूँ।" हम सुसमाचार के सेवक हैं। यह हम सबको याद दिलाता है जो मसीह के चेले हैं।

बहनो और भाइयो तुम अपने नहीं हो। तुम अपने नहीं हो। तुम किसी और के हो। तुम पर किसी दूसरे का राज्य है। तुम्हें कीमत देकर खरीदा गया है। मसीह के चेले के रूप में, तुमने अपने जीवन की दिशा को निर्धारित करने का अधिकार त्याग दिया है। पुरूषो, आप यह निर्धारित नहीं करते हैं कि अपने जीवन में आप कहाँ जायेंगे, या आपका परिवार कहाँ जाएगा। मसीह इन बातों को निर्धारित करता है। आप अपनी दिशा, या योजनाएँ निर्धारित नहीं करते हैं। मसीह आपके लिए दिशा निर्धारित करता है और योजनाएँ बनाता है। पवित्रशास्त्र में इस बात के लिए बिल्कुल भी जगह नहीं है कि आप इस यीशु को "उद्धारकर्ता" कहें और अपने जीवन के सर्वोच्च प्रभु के रूप में इस यीशु के सामने समर्पण न करें। हम सुसमाचार के सेवक हैं। माता या पिता, पति या पत्नी, शिक्षक, छात्र, वकील, अकाउण्टेंट, या कुछ भी बनने से पहले, हम सुसमाचार के सेवक हैं। यह हमारी पहचान है। "पौलुस, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया।"

दूसरा, हमें सुसमाचार के साथ भेजा गया है। जब पौलुस प्रेरित के रूप में बुलाए जाने की बात करता है, तो वह एक विशिष्ट शब्द का प्रयोग करता है जो उसे और यहूदा के अलावा बारह चेलों को बताता है। प्रेरितों के काम 1 में मत्तियाह यहूदा का स्थान लेता है। अब तेरह प्रेरित हैं जिनमें बारह चेले और पौलुस शामिल हैं, जो मसीह के पुनरूत्थान के गवाह थे, और जिन्हें मसीह द्वारा चुनकर भेजा गया था। प्रेरित शब्द का अर्थ है, "भेजा गया।" इन लोगों को कलीसिया की अगुवाई के लिए

भेजा गया था। पौलुस बारह चेलों से अलग रीति से पुनरूत्थान का गवाह बना था। इसलिए जब पौलुस एक प्रेरित के रूप में बुलाए जाने के बारे में बात करता है, तो वह उस विशिष्ट बुलाहट के बारे में बात कर रहा है जो उसके जीवन पर थी। अब मैं इस कारण यह सोचता हूँ कि जब हमारी बात आती है तो सुसमाचार के साथ भेजे जाने की तस्वीर को लागू करना ठीक है। मेरे साथ रोमियों 16 में देखें, जो इस पुस्तक का अन्तिम अध्याय है। नये नियम में हम बहुत बार प्रेरित शब्द को देखते हैं, जिसका अर्थ है, "भेजा हुआ।" अधिकाँशतः यह शब्द उन तेरह व्यक्तियों के बारे में बताता है परन्तु ऐसे समय भी हैं जब यह शब्द उन तेरह व्यक्तियों के अलावा विश्वासियों के वृहद् समूह के लिए प्रयुक्त हुआ है।

मैं आपको यह दिखाता हूँ। रोमियों 16:7, सुनें वह क्या कर रहा है। वह लोगों का अभिवादन कर रहा है, और मैं चाहता हूँ आप देखें कि वह इन लोगों का वर्णन कैसे करता है। रोमियों 16:7, *"अन्द्रुनीकुस और यूनियस को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीही हुए थे, नमस्कार।"* ये दो व्यक्ति बारहों में से नहीं हैं, और वे पौलुस भी नहीं हैं, फिर भी यहाँ उन्हें प्रेरित कहा गया है। प्रेरितों के काम 14:14 में यही तस्वीर है, जहाँ बरनबास को प्रेरित कहा गया है। फिलिप्पियों 2:25, इपफ्रुदीतुस को प्रेरित के रूप में बताया गया है; 2 कुरिन्थियों 8:23 प्रेरितों के एक अनाम समूह के बारे में बताता है। आप देखते हैं कि यह शब्द "प्रेरित"– भेजा हुआ– विशेष रूप से उन तेरह पर लागू होता है, परन्तु सामान्य रूप से प्रत्येक विश्वासी के लिए भी इसका प्रयोग हुआ है। यह नये नियम की तस्वीर है।

प्रेरितों के काम 1:8 इसे एक वास्तविकता बनाता है। परमेश्वर का आत्मा इस संसार में मसीह के प्रत्येक चेले पर है। इसे हम प्रेरितों के काम 1:8 के आधार पर देख सकते हैं, परमेश्वर का आत्मा हमारे ऊपर ताकि हम क्या बन सकें? गवाह। सुसमाचार के गवाह। हम सब सुसमाचार के साथ भेजे हुए हैं। लोग कई बार इस प्रकार कहते हैं, "गवाही देने के लिए मैं तब तक प्रतीक्षा करता हूँ जब तक पवित्र आत्मा मुझे अगुवाई नहीं देता।" हम इस प्रकार सोचते हैं कि हमें अपने शरीर में कुछ अजीब सा महसूस होता है तो पवित्र आत्मा हमें किसी व्यक्ति से अनन्त जीवन के बारे में बताने के लिए कह रहा है। यह एक हास्यास्पद विचार है। हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसने हमें पहले ही अगुवाई दे दी है। इसी कारण वह हमारे अन्दर है। हमें सुसमाचार के साथ भेजा गया है। आत्मा हमारे अन्दर है कि हम सुसमाचार के गवाह बन सकें। इसलिए यदि आपको कुछ महसूस नहीं होता है तो यह न सोचें कि आपको सुसमाचार सुनाना चाहिए या नहीं। सुसमाचार सुनाएँ क्योंकि इसी के लिए पवित्र आत्मा तुम्हारे अन्दर है। हम सुसमाचार के सेवक हैं, हम सबको सुसमाचार के साथ भेजा गया है, और यहाँ पर यह वास्तव में अच्छा हो जाता है, <u>हम सुसमाचार के लिए अलग किए हुए हैं।</u>

रोमियों 1:1 में पौलुस द्वारा प्रयुक्त अन्तिम वाक्यांश है, "परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग किया हुआ।" इसी बात पर पद 7 में बल दिया गया है जहाँ लिखा है, "उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं।" तस्वीर यह है कि संत अलग किए हुए हैं।

अब यहाँ रूचिकर बात है। पुराने नियम में, परमेश्वर विशेष उद्देश्यों के लिए लोगों को अलग करता था। परमेश्वर तम्बू को लेता है। उसने कहा यह स्थान उसकी आराधना के लिए अलग किया हुआ है। परमेश्वर मन्दिर को लेता है, और कहता है यह स्थान उसकी महिमा के प्रदर्शन के लिए अलग किया हुआ है। वह दसवाँश और भेंट लेता है। पुराने नियम में उन्हें विशेष उद्देश्यों के लिए अलग किया गया था। पुराने नियम में इन विभिन्न बातों के लिए इसी भाषा का प्रयोग किया गया है।

इसकी खूबसूरती यह है कि जब आप नये नियम में आते हैं, तो मसीह में प्रत्येक विश्वासी अलग किया गया है। अब तम्बू, या मन्दिर, या दसवाँश और भेंटों को अलग नहीं किया गया है। इसके विपरीत विश्वासियों को सुसमाचार के लिए अलग किया गया है। अब यह नितान्त अनिवार्य है, क्योंकि मुझे निश्चय है कि आज कलीसिया में सुसमाचार के प्रसार के बारे में हमारे बीच में खतरनाक रूप से पुराने नियम का विचार है।

मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ बने रहें। कलीसिया उन्नति के हमारे विचार में, हमारा वास्तव में विचार है, हमने अपने स्वयं को आश्वस्त कर लिया है, कि सुसमाचार की बढ़ोतरी का सर्वोत्तम तरीका लोगों को कलीसिया में आमन्त्रित करना है।

आज मैं आपसे जो कहना चाहता हूँ वह बहुत सरल है। लोगों को ”कलीसिया“ में आमन्त्रित न करें। लोगों को कलीसिया में आमन्त्रित न करें। वास्तव में आप स्वयं भी ”कलीसिया“ में न जाएँ। कलीसिया में न जाएँ और लोगों को कलीसिया में आमन्त्रित न करें। आप कलीसिया हैं! परमेश्वर की महिमा देखने के लिए आपको उन्हें एक भवन में लाने की आवश्यकता नहीं है। आपके अन्दर परमेश्वर की महिमा

है! उन्हें कहीं जाने का निमन्त्रण न दें, आप वहीं हैं। आपको उन्हें आमन्त्रित करने की आवश्यकता नहीं है। वे वहीं पर है। उनके सामने ही कलीसिया है। ये हमारे जीवन हैं। हमारे जीवन सुसमाचार का प्रदर्शन हैं, मसीह की महिमा का प्रदर्शन हैं। कोई भवन, कोई कार्यक्रम या कोई भी प्रदर्शन नहीं जिसे हम तैयार करते हैं। क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि लोग वास्तव में कलीसिया के भवन में भीड़ लगायेंगे? वास्तविकता यह है कि हमारे शहर के अधिकाँश खोए हुए लोग सप्ताह में एक बार कलीसिया में नहीं आयेंगे। परन्तु खोए हुए लोग पूरे सप्ताह कलीसिया के साथ– आपके साथ पूरे सप्ताह और मेरे साथ पूरे सप्ताह व्यवहार करेंगे। यही तस्वीर है। मेरे लिए सप्ताह में एक बार सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तैयार होना, या सक्षम होना, या सामर्थ पाना एक बात है। और यह बिल्कुल अलग बात है जब हर कोई जिनसे कलीसिया बनती है, पूरे सप्ताह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तैयार हो, सक्षम हो, और सामर्थ पाए हो। हमार शहर में, या किसी भी शहर में इन में से कौनसा तरीका सुसमाचार को फैलाने में अधिक प्रभावी होगा?

इसी कारण हम अपने सारे संसाधनों को अधिक से अधिक संख्या में लोगों को एक भवन की आकर्षित करने के लिए सर्वोत्तम कार्यक्रमों और प्रदर्शनों पर खर्च नहीं कर रहे हैं। इसी कारण हम अपने सारे संसाधनों को हमारे शहर में लोगों को तैयार करने पर खर्च करने वाले हैं जो हमारे शहर में जाएँ, दूसरे देशों में जाएँ और सुसमाचार का प्रचार करें। क्यों? क्योंकि लोग– कार्यक्रम नहीं, प्रदर्शन नहीं– परमेश्वर लोगों के द्वारा संसार को जीतता है। मुझे परमेश्वर के लोगों पर विश्वास है। पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के लोगों पर, परमेश्वर के लोगों की सामर्थ पर, परमेश्वर के लोगों में कार्यरत सुसमाचार की सामर्थ पर विश्वास है। कलीसियाई संस्था, कलीसिया के कार्यक्रम, कलीसिया के प्रदर्शन, आपको परमेश्वर के सुसमाचार

के लिए अलग किए होने के अर्थ से वंचित न करने पाएँ। मसीह के अनुयायियों के रूप में यही हमारा विशेषाधिकार है।

जब कलीसिया एक भवन में एकत्रित होती है तो आप लोगों को वहाँ आराधना के लिए आमन्त्रित कर सकते हैं। यह अच्छी बात है। आप आराधना में आ सकते हैं। यह भी अच्छी बात है। परन्तु कलीसिया बनें। यही सुसमाचार बाहर जाने की नये नियम की तस्वीर है। याद रखें हम किस के हैं, सुसमाचार के सेवक, सुसमाचार के साथ भेजे हुए, सुसमाचार के लिए अलग किए हुए।

हमें अपने विश्वास को पहचानने की आवश्यकता है

दूसरा, हमें अपने विश्वास को पहचानने की आवश्यकता है। सुसमाचार को सुनाने के लिए, यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हमें सुसमाचार की जानकारी होनी चाहिए। पौलुस पद 2, 3, और 4 में बिल्कुल यही करता है। वह हमें सुसमाचार का एक साराँश देता है। *"जिसकी उसने पहले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में, अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी; वह शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।"*

यह तीन पदों में वर्णन है– सुसमाचार का लघु रूप। पौलुस सुसमाचार को लेकर उसे वहाँ के अपने पाठकों की पृष्ठभूमि में रख रहा है। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि मुझे निश्चय है कि हमने अपने विश्वास में से जीवन रक्त को, सुसमाचार को निकाल दिया है। उसकी जगह हमने लाल रस रख दिया है। हमारी यह सोच है कि यदि आप एक निश्चित प्रार्थना करते हैं, तो आपको नरक की पंक्ति में से

निकलकर, स्वर्ग जाने वाली कतार में खड़े होने का टिकट मिलता है। हम में से बहुत से लोग सोचते हैं कि यह सुसमाचार है। जब हम सुसमाचार के बारे में इस प्रकार से सोचते हैं तो सुसमाचार में ऐसा बहुत कुछ है जिससे हम अपने आप को वंचित कर रहे हैं।

हमने रोमियों 3:21—26 पर एक प्रचार किया था। हमने यह सवाल पूछा था, "सुसमाचार क्या है?" मैं चाहता हूँ कि सभी विश्वासी सुसमाचार को अच्छी तरह जानें। हमें अपने हाथों की तरह सुसमाचार को जानने की आवश्यकता है। और यह हमारे दिलों का केन्द्र होना चाहिए। अब मैं यहाँ सावधान रहना चाहता हूँ क्योंकि लक्ष्य कभी भी सुसमाचार को उसके न्यूनतम स्तर पर लाना नहीं है। लक्ष्य सुसमाचार को किसी निश्चित रीति से बाँटना नहीं है, ताकि वह आसानी से "बिक" सके। तस्वीर यह नहीं है। परन्तु साथ ही, हम में से प्रत्येक के जीवन में हमें रोमियों 1:2—4 करने के योग्य होना चाहिए। सुसमाचार यह है। सुसमाचार यह है।

यह हमारा विश्वास है। यदि हम सुसमाचार को नहीं जानते हैं तो हम न केवल इस बात से चूक जायेंगे कि सुसमाचार को बाँटने का क्या अर्थ है, बल्कि इससे भी कि दैनिक आधार पर परमेश्वर के अनुग्रह को अनुभव करने का क्या अर्थ है।

अतः मैं सुसमाचार का साराँश देना चाहता हूँ जिसे हम रोमियों 3 में देखते हैं और जो मेरी आशा है कि हमारे शेष समय में मार्गदर्शक के रूप में सहायक है जब हम सुसमाचार के "धागों" के बारे में सोचते हैं।

सुसमाचार यह खुशखबरी है कि ब्रह्माण्ड के न्यायी और अनुग्रहकारी परमेश्वर ने अत्यधिक पापी मनुष्य पर नजर डाली और अपने पुत्र, यीशु मसीह, देहधारी परमेश्वर को भेजा कि वह क्रूस पर पाप के विरूद्ध उसके कोप को सहन करे और पुनरूत्थान में पाप के ऊपर उसकी सामर्थ को दिखाए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे उसका सदा के लिए परमेश्वर से मेल हो जाए।

यह सुसमाचार की तस्वीर है। अगले कुछ प्रचारों में मैं रोमियों 3 में सुसमाचार की इस तस्वीर को लेकर इन पाँच विभिन्न धागों के बारे में बात करना चाहता हूँ। मैं उन्हें इस प्रचार में आपके सामने रखने जा रहा हूँ और फिर अगले प्रचारों में हम उनके बारे में बात करेंगे। इस समय हम उन पर केवल एक नजर डालेंगे यह देखने के लिए कि हम कहाँ जा रहे हैं।

पहला धागा है परमेश्वर का चरित्र। परमेश्वर सुसमाचार का शुरूआती बिन्दू है। वह सुसमाचार का अन्तिम बिन्दू है। यह परमेश्वर का सुसमाचार है, परमेश्वर कौन है, और परमेश्वर कैसे कार्य करता है। उसका चरित्र सुसमाचार की समझ के लिए महत्वपूर्ण है।

दूसरा, मनुष्य का पाप। पौलुस रोमियों की पुस्तक में हमें मनुष्य की हताशा– मनुष्य के पाप की तस्वीर दिखाने के लिए कठिन मेहनत करता है। यह सुसमाचार का वह भाग है जिस पर हम आज के समय में अक्सर बहुत कम समय व्यतीत करते हैं। हमें सावधान रहना है कि इसे नजरअंदाज न करें। मनुष्य का पाप सुसमाचार की समझ में मूलभूत है। जब तक हम अपने पाप को नहीं समझते तब तक हम उद्धार नहीं पाते हैं; पापपूर्णता को दरकिनार नहीं कर सकते हैं। अधिक से अधिक लोगों

तक सुसमाचार को "बेचने" के प्रयास में, हमारी संस्कृति में अधिक से अधिक लोगों के लिए इसे स्वादिष्ट बनाने के प्रयास में हमें सावधान रहना है कि हम यह सोचने की गलती न करें कि सुसमाचार पाप को शान्त करता है। यह पाप को शान्त नहीं करता है। यह पाप को घात करता है। सुसमाचार रूखे तरीके से हमारे घमण्ड का सामना करता है। रूखे तरीके से जो पाप पर जय पाता है, परन्तु यह हमारे जीवनों में पाप पर सीधे वार करता है और यह एक अच्छी बात है। हमें जरूरत है कि हमारे जीवन में पाप का सामना किया जाए।

तीसरा, मसीह की पर्याप्तता। "मसीह की पर्याप्तता" से मेरा मतलब मसीह के व्यक्तित्व और मसीह के कार्य दोनों से है। मसीह सुसमाचार का केन्द्र है, और मसीह के व्यक्तित्व को आप रोमियों 1 के पद 3–4 में देखते हैं। पद 3 में आप उसी मानवता के वर्णन को देखते हैं। पद 4 में आप उसकी दैवीयता के वर्णन को देखते हैं। वह पूर्ण मनुष्य है, पूर्ण परमेश्वर है, उसका व्यक्तित्व और कार्य, उसका जीवन, उसकी मृत्यु, मृतकों में से उसका पुनरूत्थान। मसीह का व्यक्तित्व और कार्य सुसमाचार की समझ के लिए आधारभूत है। क्रूस पर जो हुआ वह क्या था जो सम्पूर्ण मानवीय इतिहास में सारे मनुष्यों को पाप की क्षमा उपलब्ध कराता है? उस पल के बारे में इतना महत्वपूर्ण क्या था? यह परमेश्वर का चरित्र है, मनुष्य का पाप, मसीह की पर्याप्तता।

चौथा धागा है विश्वास की अनिवार्यता। यह पूरी रोमियों की पुस्तक में है, विशेषतः अध्याय 3, 4, और 5 के अन्त में। विश्वास वह माध्यम है जिसके द्वारा सुसमाचार हमारे जीवन की वास्तविकता बनता है; जिसके द्वारा यह सुसमाचार हमारे दिलों में लागू होता है। ठीक ही कहा गया है, "आज्ञापालन विश्वास से आता है।" यह किसी

सत्य के बारे में संवेदनहीन, बौद्धिक, सैद्धान्तिक विचार वाला विश्वास नहीं है। यह उससे अलग है। यह जीवन है। यह आज्ञापालन है जो विश्वास से आता है। यह सत्य है जो हमारे अनुभव में फलवन्त होता है।

फिर पाँचवाँ, अनन्तता की अनिवार्यता। यह अन्तिम धागा है जिसे हम देखने वाले हैं। इस सुसमाचार के हम में से प्रत्येक के लिए निहितार्थ हैं, न केवल अब, बल्कि अनन्तकाल के लिए भी। न केवल इस प्रचार को सुनने या पढ़ने वाले, बल्कि सम्पूर्ण इतिहास के प्रत्येक पुरूष और स्त्री का अनन्तकाल इस सुसमाचार के प्रति उनके प्रत्युत्तर पर निर्भर है।

अगले कुछ सन्देशों में मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि रोमियों की पुस्तक में बुने हुए इन पाँच धागों को हमारे बच्चों के पालन–पोषण के तरीके में, हमारे कार्य करने के तरीके में, सप्ताह के अन्त में समय को व्यतीत करने के हमारे तरीके में, या हमारे आस–पास के लोगों के साथ हमारी बातचीत के तरीके में किस प्रकार बुना जा सकता है। सुसमाचार के ये धागे हमारे मन और हमारे मुँह के स्वाभाविक हिस्से कैसे बन सकते हैं, ये धागे हमारे दैनिक वार्तालापों में कैसे घुसपैठ कर सकते हैं? मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आप बैठे कार्य कर रहे हैं, और काम के बीच में अचानक मनुष्य की भ्रष्टता के बारे में प्रचार करने लगें। परन्तु इन सुसमाचार के धागों को लेकर प्रतिदिन उन्हें सीलने का एक तरीका है। इसी को मैं चाहता हूँ कि हम आने वाले दिनों में देखें। क्योंकि यदि हम उन धागों को नहीं जानते हैं तो ऐसा नहीं कर सकते हैं।

हमें यह समझना आवश्यक है कि हम यहाँ क्यों हैं

तीसरा, <u>हमें यह समझना आवश्यक है कि हम यहाँ क्यों हैं।</u> अब हम यहाँ पर केन्द्र की ओर बढ़ रहे हैं। पद 5 में, पौलुस कहता है, "उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।" मैं चाहता हूँ आप इसे देखें। पौलुस ने सुसमाचार को ग्रहण किया, परन्तु वह जानता था कि यह सुसमाचार का अन्त नहीं है। पौलुस को सुसमाचार दिखाने में परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं था कि यह पौलुस के पास रहे। मैं इसे एक बार और कहता हूँ। पौलुस को सुसमाचार देने में, पौलुस को सुसमाचार दिखाने में, सुसमाचार के प्रति पौलुस की आँखों को खोलने में परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं था कि यह पौलुस के पास रहे। यह इससे बढ़कर है।

गलातियों 1 पर आएँ। गलातियों 1:15–16. यदि आपकी बाइबल में ये वचन रेखांकित नहीं हैं तो मैं आपको उन्हें रेखांकित करने की प्रेरणा दूँगा। यह सुसमाचार में परमेश्वर के उद्देश्य की तस्वीर है जिस प्रकार पौलुस इसका वर्णन करता है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि वह किस प्रकार परमेश्वर के अनुग्रह को परमेश्वर के उद्देश्य से जोड़ता है। इसे देखें। वह याद कर रहा है कि परमेश्वर ने उसके जीवन में क्या किया है, और वह ये शब्द कहता है, "परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे कि," अब यह उद्देश्य वाक्य है, "कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ।" अब मैं चाहता हूँ हम यहाँ ठहरें।

सोचें उसने अभी क्या कहा है। "परमेश्वर जिसने... अपने अनुग्रह से मुझे बुलाया, मुझ में अपने पुत्र को प्रकट किया कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ।" (गलातियों 1:15). पौलुस, परमेश्वर ने तुम पर यीशु को प्रकट क्यों किया?

उसने तुम्हें सुसमाचार क्यों दिखाया? पौलुस कहता है, "उसने सुसमाचार को मुझ पर प्रकट किया ताकि..." क्या? हर रविवार को आराम से बैठकर धार्मिक दिनचर्या का आनन्द ले सकूँ? ताकि मैं इस संसार के सुख–विलास में डूब सकूँ और अन्त में मुझे नरक से छुटकारे का मुफ्त टिकट मिल जाए? "उसने इस कारण मुझे सुसमाचार दिया, कि मैं अन्यजातियों में उसके सुसमाचार का प्रचार करूँ।" सुसमाचार का अन्त, पौलुस के जीवन में सुसमाचार के अन्त के बारे में परमेश्वर की योजना पौलुस पर केन्द्रित नहीं थी। यह अन्यजातियों में परमेश्वर की महिमा पर केन्द्रित थी। यही तस्वीर है।

हमारे लोकप्रिय विचारों के विपरीत, जब यीशु क्रूस पर मरे, तो वह केवल आपके लिए नहीं मरे, और वह केवल मेरे लिए नहीं मरे। वह मरे, लूका 24:47–49, ताकि मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार सारी जातियों में किया जाए। हमारे हाथों और हमारे दिलों में सुसमाचार के होने का कारण यही है कि हम उस सुसमाचार को सुना सकें। यह स्व–उपभोग के लिए इच्छित सुसमाचार नहीं है। यह वैश्विक वृद्धि के लिए इच्छित सुसमाचार है।

इसका क्या अर्थ है? हम यहाँ क्यों हैं? सबसे पहले हम उसके नाम की महिमा के लिए यहाँ पर हैं। उसके नाम की खातिर यहाँ पर हैं। सुसमाचार में सब कुछ परमेश्वर के चारों ओर घूमता है। परमेश्वर अपने नाम की खातिर सुसमाचार देता है। हमें सुसमाचार को देने में परमेश्वर निर्णायक रूप से अपनी महिमा के प्रति समर्पित है। मैं आपको तीन सत्य बताना चाहता हूँ जिन्हें मैं सुसमाचार प्रचार की विचारधारा से जोड़ना चाहता हूँ। में शीघ्रता से उन्हें बताऊँगा। परन्तु व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के सन्दर्भ में मेरे साथ इसके बारे में सोचें।

पहला, परमेश्वर सुसमाचार का दाता है। वही सुसमाचार देने वाला है। हम में से कोई उद्धार का निर्माण नहीं कर सकता है। हम में से कोई भी अपने आप को परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं बना सकता है। अवश्य है कि परमेश्वर हमें धर्मी ठहराए। हम में से कोई भी सुसमाचार में उद्धार की पहल नहीं कर सकता है। सुसमाचार में पहल सदैव परमेश्वर की ओर से होती है। हम तक उद्धार को पहुँचाने में सुसमाचार में सर्वोच्च कर्ता वही है। परमेश्वर सुसमाचार का दाता है। सोचें यह व्यक्तिगत सुसमाचार को किस प्रकार प्रभावित करता है।

कौन इतना अच्छा, बुद्धिमान, और तीव्र है कि लोगों को मसीह में ला सके? हम में से किस में इतनी बौद्धिक वीरता है, या वाद—विवाद क्षमता है, या लोगों को समझाकर मसीह में लाने की करिश्माई योग्यता है? किसी व्यक्ति के साथ मसीह के पीछे चलने का निर्णय लेने के लिए हेरफेर करना असंभव है। यूहन्ना 6:44 हमें बताता है जब तक पिता आकर्षित न करे कोई पुत्र के पास नहीं आ सकता। परमेश्वर सुसमाचार का दाता है। केवल वही उसे दे सकता है। यह अच्छा समाचार है, क्योंकि इसका अर्थ है कि सफल सुसमाचार प्रचार हम पर निर्भर नहीं हैं जो अपने आप को अपर्याप्त मानते हैं। यदि आप अपने आप को अपर्याप्त नहीं मानते हैं तो आपके साथ घमण्ड की समस्या है। जब व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की बात आती है तो हम सब में एक गहरी अपर्याप्तता है। यह अच्छी बात है क्योंकि उसने इस सारी बात को इस प्रकार बनाया है कि केवल वही सुसमाचार देता है, और केवल उसी को महिमा मिलती है।

दूसरा, <u>वह सुसमाचार का उपहार है</u>। याद है? हमें सुसमाचार में क्या मिलता है? हमें परमेश्वर मिलता है; परमेश्वर से धार्मिकता मिलती है, सुसमाचार में परमेश्वर का चरित्र प्रकट है। हमारा परमेश्वर से मेल होता है। हमने इसे उस परिभाषा में देखा था। हमारा सदा के लिए परमेश्वर से मेल होता है। अब हमें सावधान रहना है कि हम इसके बारे में किस प्रकार सोचते हैं। परमेश्वर सुसमाचार का उपहार है, तो हमें लोगों को मसीह में आने के लिए बुलाते समय हमें सावधान रहना है कि हम यह न कहें, "मैं तुम्हें मसीह में आने का निमन्त्रण देता हूँ, मसीह पर विश्वास करने का अनुरोध करता हूँ ताकि आपको क्षमा मिल सके; ताकि आप स्वर्ग जा सकें; ताकि आपको सर्वोत्तम जीवन प्राप्त हो सके। मसीह में आओ और तुम्हें सन्तुष्टि मिलेगी; तुम्हें सफलता मिलेगी; तुम्हें आनन्द मिलेगा; तुम्हारे सारे सपने पूर्ण हो जायेंगे। यदि तुम सुसमाचार को ग्रहण करते हो तो ये सारी बातें तुम्हें प्राप्त होंगी।"

परमेश्वर की निन्दा! व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार यह कहना नहीं है, "उन सारी बातों को देखो जो तुम्हें मिल सकती हैं।" व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार यह कहना है, "तुम परमेश्वर को पा सकते हो। तुम्हें परमेश्वर की लालसा रखनी चाहिए। तुम्हें परमेश्वर की आवश्यकता है।" परमेश्वर हमारी सहायता करे, हमने सुसमाचार से स्वयं परमेश्वर को निकाल दिया है, और उसके स्थान पर उसके उपहारों को रख दिया है। हम परमेश्वर की बजाय उसके दानों का प्रस्ताव देते हैं और उसे हम सुसमाचार प्रचार कहते हैं। यह सुसमाचार प्रचार नहीं है। यदि हम लोगों के सामने परमेश्वर के उपहारों को दिखाते हैं, और उनसे कहते हैं कि उन्हें यह सब प्राप्त होगा, तो वे कहेंगे, "ठीक है, मैं इन सबको ले लूँगा।" परन्तु इन सारी बातों के कारण, उनके मन में अपने हृदयों को परमेश्वर के सामने समर्पित करने की बात दूर–दूर तक नहीं होगी। वास्तविकता यह है कि यदि वे परमेश्वर को नहीं चाहते हैं तो चाहे वे

कितनी ही बार किसी सूत्रबद्ध प्रार्थना को क्यों न करें, वे कभी स्वर्ग नहीं जा सकेंगे। परमेश्वर सुसमाचार का दान है, और जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो हम उसका प्रचार करते हैं– परमेश्वर का उसकी सम्पूर्ण खूबसूरती में; उसकी सम्पूर्ण महिमा में। सम्पूर्ण सुसमाचार उसके नाम पर केन्द्रित है।

वह सुसमाचार का दाता है, वह सुसमाचार का दान है, और वह सुसमाचार का लक्ष्य है। रोमियों 15:8–9 पर आएँ। पौलुस इस पुस्तक के अन्त की ओर आता है और वह कहता है, "मसीह अपना जीवन देने इसलिए आया कि अन्यजाति उसकी दया के कारण परमेश्वर की स्तुति करें।" यीश इसलिए आया कि जातियाँ परमेश्वर की महिमा करें। यही तस्वीर यूहन्ना 12:20–28 में है जब यीशु क्रूस की ओर जाने वाले हैं और वह कहते हैं, "अब मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? नहीं, क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ।" (यूहन्ना 12:27–28). आपका कारण क्या है यीशु? आप इस घड़ी को क्यों पहुँचे? क्रूस की ओर जाने से पहले वे ये शब्द कहते हैं: "पिता, अपने नाम की महिमा कर।" (यूहन्ना 12:28). पिता की महिमा, पिता के सम्मान, पिता के प्रताप, पिता की धार्मिकता के कारण ही यीशु क्रूस की ओर गया था। इसी कारण वह गया था। परमेश्वर सुसमाचार का लक्ष्य है। इसलिए जब हम सुसमाचार प्रचार के बारे में सोचते हैं, हम उसके नाम की खातिर इसे करते हैं।

इसी कारण हम यहाँ हैं, न केवल उसके नाम की खातिर, उसके नाम की महिमा के लिए, बल्कि हम जातियों तक पहुँचने के लिए यहाँ पर हैं। उसके द्वारा और उसके नाम की खातिर हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली है कि जातियों से–सारी जातियों

से– लोगों को विश्वास के द्वारा आने वाले आज्ञापालन की ओर बुलाएँ। इसीलिए हम यहाँ पर हैं।

हमने इसे देखा नहीं है, परन्तु आप रोमियों 15 पर जाएँ और आप देखते हैं कि वह इस पत्री को क्यों लिखता है। वह रोमियों को यह पत्री लिख रहा है क्योंकि वह स्पेन पहुँचना चाहता है। वह वहाँ इसलिए पहुँचना चाहता है क्योंकि स्पेन में उन्होंने सुसमाचार नहीं सुना है। वह कहता है, "मेरी लालसा है कि मैं उस स्थान पर सुसमाचार को सुनाऊँ जहाँ उसे सुना नहीं गया है। वहाँ पहुँचने के लिए मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।" इसीलिए वह इस पुस्तक को लिख रहा है। यह मिशनरी सहायता पत्र है। उसके मन में जातियों में परमेश्वर की महिमा है। रूचिकर बात यह है कि वह उन लोगों का वर्णन करता है जिनसे वह पहले कभी नहीं मिला है, और वह कहता है, "मैं तुम सब के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है।" क्या यह एक महान तस्वीर नहीं है? इसे लिखते समय पौलुस अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा में है। वह कुरिन्थ में है। वह इधर–उधर घूमकर कलीसियाएँ स्थापित करता रहा है। अभी तक वह रोम नहीं गया है, परन्तु जब वह विभिन्न नगरों में जाता है, विभिन्न मार्गों पर यात्रा करता है, विभिन्न लोगों के सम्पर्क में आता है, वे रोम में उन्होंने जो देखा है उसके आधार पर उसे मसीह के बारे में बताते हैं। रोम में उनके विश्वास की सूचना सारे जगत में फैल गई थी। क्या यह एक महान तस्वीर नहीं है? हम जातियों तक पहुँचने के लिए यहाँ पर हैं।

देखें पौलुस किस प्रकार इसके बारे में बात करता है। वह बताता है कि हमारी प्रार्थना करने की एक जिम्मेदारी है। वह रोम के इन विश्वासियों को संबोधित करता

है, और वह कहता है, "मैं नित्य अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करता हूँ।" वह उनसे मिला भी नहीं है, और वह उनके लिए प्रार्थना कर रहा है। काश परमेश्वर हमें इस प्रकार प्रार्थना करना सिखा देता। क्या आपको अहसास है कि हमारे पास सारी जातियों में कलीसियाई अगुवों के लिए प्रार्थना करने का सौभाग्य है? निश्चित रूप से आप इक्वेडोर, लेबनान, वेनेजुएला, इण्डोनेशिया, जापान, या चीन के कलीसियाई अगुवों को नहीं जानते होंगे, परन्तु वहाँ के कलीसियाई अगुवों के लिए प्रार्थना करना हमारा सौभाग्य और हमारी जिम्मेदारी है। एक दिन जब हम उनसे मिलते हैं तो हम उनसे गले मिलकर कह सकते हैं, "हम आपके प्रार्थना करते रहे हैं।" वे कहते हैं, "तुम तो हमें जानते भी नहीं।" "हाँ, फिर भी हम निरन्तर, नित्य अपनी प्रार्थनाओं में आप को याद करते रहे हैं।" दूसरे स्थानों की कलीसिया के लिए प्रार्थना करना, सुसमाचार से वंचित देशों के लिए प्रार्थना करना, संसार के खोए हुए लोगों के लिए प्रार्थना करना, और अपने शहर के लोगों के लिए प्रार्थना करना। हम इस तरह प्रार्थना कर रहे हैं।

प्रार्थना करना हमारी जिम्मेदारी है और हमें एक कर्ज चुकाना है; यहाँ पर यह वास्तव में अच्छा हो जाता है। पद 14–15 में पौलुस कहता है, "मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ। अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ।" पौलुस रोम में पहुँचने के लिए अत्यधिक उत्साहित है। क्यों? क्योंकि उस पर रोम में जाने का दायित्व है; उस पर यहूदियों और यूनानियों के बारे में, बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों के बारे में दायित्व है। वह वास्तव में कहता है, "मुझे एक कर्ज चुकाना है।" जब आप किसी घर को जलते देखते हैं, या आप किसी को डूबते देखते हैं, तो आपके पास उन्हें बचाने का प्रयास करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता है। आप विवश होते

हैं। आराम से बैठना एक विकल्प नहीं है। यह एक प्रकार का ऋण है, यही पौलुस कह रहा है। कैसी अतुल्य तस्वीर है। वह मसीह का है, और मसीह को उसे संसार को देना है। मैं इसे दूसरे तरीके से बताता हूँ। मेरा विश्वास है कि यहाँ तस्वीर बिल्कुल साफ है। स्वर्ग की इस ओर के प्रत्येक व्यक्ति पर नरक की इस ओर के प्रत्येक खोए हुए व्यक्ति के प्रति सुसमाचार का कर्ज है। हमारा एक दायित्व है। भाइयो और बहनो, हमारे चारों ओर रहने वाले उन हजारों–लाखों के प्रति हमारा एक दायित्व है जो इस सुसमाचार को नहीं जानते हैं। हम उनके कर्जदार हैं। यह किसी आर्थिक ऋण से कहीं अधिक गहरा है। हम पर सुसमाचार का ऋण है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है।

हम पर उनके सुसमाचार का कर्ज है, और न केवल वे, बल्कि अफ्रीका में पाशविक धर्मों का पालन करने वाले 3,000 कबीले भी जो पूर्णतः परमेश्वर से वंचित हैं। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के प्रति हमारे ऊपर सुसमाचार का कर्ज है। जापान, लाओस, और वियतनाम के पैंतीस करोड़ बौद्ध धर्म के अनुयायी जो बौद्ध धर्म के नियमों और कानूनों को मानते हैं। उनमें से प्रत्येक के प्रति हमारे ऊपर सुसमाचार का कर्ज है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव के 95 करोड़ हिन्दुओं के प्रति हमारे ऊपर सुसमाचार का कर्ज है। हम पर चीन और उत्तर कोरिया जैसे साम्यवादी देशों के एक अरब से अधिक लोगों के प्रति सुसमाचार का कर्ज है, जो परमेश्वर के अस्तित्व से पूर्णतः इन्कार करने वाले नास्तिक दर्शनशास्त्रों के साथ बड़े होते हैं। हम पर एक अरब तीस करोड़ मुसलमानों के प्रति सुसमाचार का कर्ज है जो एक झूठे ईश्वर के लिए उपवास करते हैं, भिक्षा देते हैं, मक्का की तीर्थयात्रा करते हैं और दिन में पाँच बार नमाज पढ़ते हैं। यद्यपि ये संसार के सर्वाधिक कठिन स्थानों

में से नहीं है लेकिन हमारे ऊपर उनके प्रति कर्ज है, उनमें से प्रत्येक के प्रति हमारे ऊपर सुसमाचार का कर्ज है।

क्या हम इस पर विश्वास करते हैं? सावधान रहें, क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं, तो यह कलीसिया में एकत्रित होने की हमारी रीति को पूर्णतः बदल देता है। यह हमारे और हमारे परिवारों के जीने के तरीके को पूर्णतः बदल देता है। यदि हमें यह अहसास है कि जातिगत या सांस्कृतिक भिन्नताओं के बिना हम सब के प्रति दायित्व है, तो हम पर सारे लोगों तक सुसमाचार को पहुँचाने का दायित्व है। जब हमें यह अहसास होता है कि हमें एक ऋण चुकाना है, तो हम उसे चुकाने के लिए जीते हैं। इसी कारण हम यहाँ पर हैं। इसी कारण हम इस समय स्वर्ग में नहीं हैं। हम यहाँ पर उसके नाम की महिमा के लिए हैं, हम जातियों तक पहुँचने के लिए यहाँ पर हैं, हमारी प्रार्थना करने की जिम्मेदारी है, और हमें एक कर्ज चुकाना है। क्या आप देख रहे हैं यह कितना आधारभूत है? जब तक ये बातें हमारे दिलों को जकड़ न लें, व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार केवल एक विचार ही रहेगा। हमें याद रखने की आश्यकता है कि हम किस के हैं, हमें अपने विश्वास को पहचानना है, और हमें समझना है कि हम यहाँ क्यों हैं।

हमें निश्चय करने की आवश्यकता है कि हम कैसे जीयेंगे

अन्तिम आधार, हमें निश्चय करने की आवश्यकता है कि हम कैसे जीयेंगे। और यहाँ पर हम अपने पढ़े हुए परिच्छेद के अन्तम दो पदों पर आते हैं, पद 16–17. ये ऐसे पद हैं जिन पर आप लम्बे समय पर प्रचार कर सकते हैं। इस प्रचार में उनके बारे में पूरी तरह बात करने का बिल्कुल भी समय नहीं है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि हम पौलुस के दिल के संबंध में उन पर एक नजर डालें। उसके निश्चय के बारे में

सोचें कि वह कैसे जीने वाला था। सोचें जब वह कहता है, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता।" पहली सदी में सुसमाचार लज्जा ही था। इसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। एक निर्धन यहूदी बढ़ई– क्रूस पर चढ़ाया गया, कीलों से ठोक दिया गया, क्रूस पर मार दिया गया– ही यहूदी धर्म के इस सम्प्रदाय का आरम्भ है। यह किसी भी तरह से बौद्धिक कुलीनों को शामिल नहीं करता है। इसलिए रोमियों दर्शनशास्त्रों और विचारधाराओं, तथा रोमी ताकत के दृष्टिकोण से इसके बारे में सोचें। उनके बारे में सोचें जो यहूदी धर्म के इस छोटे सम्प्रदाय को एक बढ़ई के बारे में यह कहते हुए देख रहे हैं कि वह जी उठा है। यह सम्प्रदाय– मसीही लोग– आमजन थे, और उनमें कई गुलाम भी थे। पहली सदी में प्रभु भोज के कारण उन्हें नरभक्षी भी समझ लिया गया था। लज्जा सुसमाचार से जुड़ी है और पौलुस इसे जानता था। 1 कुरिन्थियों 1, "सुसमाचार मूर्खता है।" (1 कुरि. 1:18). यह संसार के लिए मूर्खता है। वह इससे चकित नहीं था।

परन्तु जब पौलुस का मसीह से सामना हुआ, जब उसका सुसमाचार से सामना हुआ, तो उससे लज्जा की बिल्कुल अलग ही एक तस्वीर मिली। पहली बार उसे अहसास हुआ कि अपने जीवन में वह जिन सारी बातों को करने और पाने के लिए जी रहा था वे सब परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह का प्रमाण थीं, और वह लज्जाजनक था, अनन्त रूप से लज्जाजनक। उसने यीशु को आमने–सामने देखा, और यीशु ने उससे कहा, "मैं वही यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है।" उन पलों में उसे अपने पाप की लज्जा का अहसास हुआ। परन्तु यीशु ने उस लज्जा को ढाँप दिया। पौलुस परमेश्वर द्वारा तिरस्कृत होने के स्थान से परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होने के स्थान पर पहुँच गया, परमेश्वर के सामने अशुद्ध से शुद्ध बन गया, परमेश्वर के सामने दोषी से निर्दोष बन गया, परमश्वर के सामने लज्जित से सम्मानित बन गया।

अब जब ऐसा रूपान्तरण आपके जीवन में होता है, तो संसार चाहे सुसमाचार के बारे में जो भी कहे, आप फिर लज्जित नहीं होते। आपका पाप चाहे कितना भी गहरा हो, आपका अतीत चाहे कितना भी काला हो, यीशु ने आपकी सारी लज्जा को अपने ऊपर ले लिया है और इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा आप अपने उद्धार के लिए खड़े हो सकते हैं और कह सकते हैं, "मैं इस सुसमाचार से नहीं लजाता।" निश्चित करें कि हम कैसे जीयेंगे। हम इस तरह जीयेंगे जैसे कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें लज्जित कर सके, कुछ भी नहीं। कोई दर्शनशास्त्र, कोई विचारधारा, कुछ भी नहीं।

यही इस बात का केन्द्र है कि क्यों हम में से कुछ लोग व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की बात पर इतने असहज हो जाते हैं, ठीक? जब हम सुसमाचार प्रचार के बारे में सोचते हैं, हम सोचते हैं, "मैं सुसमाचार नहीं बाँट सकता। लोगा सोचेंगे मैं पागल हूँ। वे इस पर विश्वास नहीं करेंगे। वे कहेंगे वे पहले भी इसे सुन चुके हैं और उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है।" ये सारे विचार– हम लज्जा के बारे में सोचने लगते हैं। पौलुस कहता है हम लज्जित नहीं हैं। वह हमारा सहयोगी है। "हम सुसमाचार से नहीं लजाते क्योंकि यह उद्धार पाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की सामर्थ है।" क्या आपने समझा वह यहाँ क्या कहता है? रोम की कलीसिया को लिखते हुए, जो इन सारे दर्शनशास्त्रों और विचारधाराओं से घिरी है, शक्तिशाली रोमी साम्राज्य, और वह कहता है कि इन दर्शनशास्त्रों में से, इन विचारधाराओं में से किसी में भी, लोगों को पाप से उद्धार देने की सामर्थ नहीं है।

यह हमारे लिए आज याद रखने के लिए अच्छा है। कार्य की किसी भी मात्रा, अच्छी सलाह की किसी भी मात्रा, कितनी भी संख्या में स्वयं–सहायता पुस्तकों, या स्वयं–सहायता प्रचारों, या स्वयं–सहायता सिद्धान्तों की यीशु मसीह के सुसमाचार से तुलना नहीं की जा सकती। हमारी संस्कृति के सारे दर्शनशास्त्र, और सारी विचारधाराएँ, चाहे वे कितनी भी परिष्कृत क्यों न हों, यीशु मसीह के सुसमाचार के सामने वे ढ़ह जाती हैं। केवल यही, और केवल यही उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ है। और कुछ भी नहीं। सुसमाचार के अलावा और कुछ भी नहीं है जो अनन्तकाल के लिए लोगों के दिलों को बदल सके।

इसका अर्थ है कि हम इस तरह जीते हैं जैसे कुछ भी हमें लज्जित नहीं कर सकता, परन्तु इस तरह भी जैसे कुछ भी हमें रोक नहीं सकता। मैं आपको इसे दिखाना चाहता हूँ। यहाँ पर यह वास्तव में अच्छा हो जाता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्त में आएँ, प्रेरितों के काम 28, रोमियों 1 से ठीक पहले। मैं चाहता हूँ आप इसे देखें। यहाँ की पृष्ठभूमि– प्रेरितों के काम 13–28 पद में हम पढ़ते है पौलुस मिशनरी यात्राओं पर जा रहा है। वह विभिन्न नगरों में जाता है। अक्सर वह किसी नगर में जाता, वहाँ आराधनालय में प्रचार करता, उसे आराधनालय से निकाल दिया जाता, बाहर निकलकर वह नगर में प्रचार करता, और लोग क्रोधित होकर उसे नगर से बाहर निकाल देते। पौलुस के दिन इसी प्रकार बीतते थे।

वह एक नगर में जाता, और वहाँ परिस्थितियाँ कठिन हो जाती। वे उसे नगर से भगा देते। लुस्त्रा में उसे पत्थरवाह किया गया और मरने के लिए छोड़ दिया गया। फिलिप्पी में उसे कैद कर लिया गया। थिस्सलुनीके में दंगा हो जाता है। कभी उसे रात में चोरी–छिपे निकाला जाता है। उन्होंने पौलुस के साथ चाहे जो किया हो,

सुसमाचार फिलिप्पी में फैला। वहाँ पर एक कलीसिया है जो आनन्द से बढ़ रही है जिसे हम बाद में नये नियम में देखते हैं। उन्होंने थिस्सलुनीके में चाहे जो किया, लेकिन वहाँ एक कलीसिया है। ऐथेन्स में उन्होंने चाहे उसका मजाक उड़ाया हो, लेकिन वहाँ विश्वासी हैं। सुसमाचार आगे बढ़ रहा था। कुरिन्थ में चाहे कितनी भी कठिनाईयाँ हों जहाँ उसने इस पत्री को लिखा, लेकिन सुसमाचार आगे बढ़ रहा है। वे पौलुस को रोकने का प्रयास कर रहे हैं, परन्तु वे सुसमाचार को नहीं रोक सकते। वह फैल रहा है।

पौलुस कुरिन्थ नामक एक नगर से रोमियों की पत्री को लिख रहा है। वह इस पत्री को लिखता है, उस पर मोहर लगाता है और उसे भेज देता है और कहता है, "मैं यरूशलेम की कलीसियाओं के लिए भेंट लेकर वहाँ जा रहा हूँ, और फिर मैं रोम में आकर तुम से मिलूँगा।" और वह यही करता है। वह यरूशलेम में जाता है। एकमात्र समस्या यही है कि वहाँ पहुँचने पर उस पर परमेश्वर की निन्दा करने और कानून को तोड़ने का आरोप लगाया जाता है और उसे कैद कर लिया जाता है। इस कचहरी की प्रक्रिया के द्वारा उसे रोम में जाने की सजा मिलती है। अन्ततः वह रोम पहुँचता है परन्तु उन परिस्थितियों में नहीं जैसी पौलुस ने योजना बनाई थी, क्योंकि वह जंजीरों में रोम जाता है। प्रेरितों के काम 28 में हम देखते हैं पौलुस रोम में है, जहाँ वह जाना चाहता था, और जहाँ के लिए उसने इस पुस्तक को लिखा था। वह वहाँ है, परन्तु वह नजरबन्द है।

वह इस घर में फँसा है, इस किराए के घर में, नजरबन्द है। परन्तु मैं चाहता हूँ आप देखें कि प्रेरितों के काम की पुस्तक कैसे समाप्त होती है। प्रेरितों के काम 28:30, इसे देखें: "वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा, और जो उसके पास

आते थे, उन सब से मिलता रहा।" देखें उसने क्या किया। "बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।" (प्रेरितों के काम 28:31). आप इस व्यक्ति में सुसमाचार को नहीं रोक सकते हैं। रूचिकर बात पद 31 में है– प्रेरितों के काम की पुस्तक का अन्तिम पद– प्रेरितों के काम की पुस्तक में मूलभाषा में अन्तिम शब्द "प्रभु यीशु मसीह नहीं है," न ही यह वाक्यांश है, "प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।" परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक में नये नियम की मूलभाषा में अन्तिम शब्द का अनुवाद है, "बिना रोक–टोक।" मूलभाषा का अन्तिम हमारे अधिकाँश अनुवादों का अन्तिम शब्द नहीं है। इस शाब्दिक अर्थ है, "बिना किसी रूकावट के।"

इस तस्वीर को समझें। पुस्तक में जातियों में सुसमाचार के प्रसार के बारे में अन्तिम शब्द यह है कि सुसमाचार बिना किसी रूकावट के फैल रहा है। देखें, आप इस सुसमाचार को नहीं रोक सकते हैं, चाहे आप कितनी भी कोशिश करें, चाहे संसार कुछ भी करे। आप इस सुसमाचार को नहीं रोक सकते हैं। इसी कारण हम लजाते नहीं हैं क्योंकि, "यह उद्धार पाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों 1:16). कोई संस्कृति, कोई दर्शनशास्त्र, कोई विचारधारा कलीसिया के हृदय में इस सुसमाचार की सामर्थ को नहीं रोक सकती है।

व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के लिए अन्तिम प्रश्न...

यह हमें व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के अन्तिम प्रश्न पर लाता है। और वह सवाल है, क्या सुसमाचार आपके साथ ही रूक जायेगा? यह सुसमाचार जो आप के दिल

में है, आपके जीवन में है, क्या यह आपके साथ रूक जायेगा या यह आपके द्वारा फैलेगा? मसीह के अनुयायियों के रूप में, अपने दिल की गहराई से हमारे लिए इस प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। क्या मैं अपना जीवन सुसमाचार को फैलाने के लिए जीऊँगा, या मेरा जीवन सुसमाचार के स्व–उपभोग के लिए होगा? ये दो विकल्प हैं। हमारा दिल कहाँ है?

क्या आप इस पल परमेश्वर से कहेंगे कि वह उस सुसमाचार के द्वारा अपनी अत्यधिक महिमा करे जिसे उसने हमें दिया है। यदि आप मसीह के अनुयायी हैं तो अपने दिलों को जाँचें। क्या आप सुसमाचार के सेवक के समान, सुसमाचार के साथ भेजे हुए व्यक्ति के समान, सुसमाचार के लिए अलग किए हुए व्यक्ति के समान जी रहे हैं? क्या आप याद रखने की आवश्यकता है कि आप किस के हैं? क्या आप सुसमाचार को जानते हैं? क्या आप अपने विश्वास को पहचानते हैं? क्या आप समझते हैं कि आप यहाँ क्यों हैं? आप जहाँ रहते हैं वहाँ क्यों रह रहे हैं? आप जहाँ नौकरी करते हैं वहाँ नौकरी क्यों करते हैं? उसके नाम की महिमा के लिए, जातियों तक पहुँचने के लिए। परन्तु वह आपके लिए कैसा होगा? हमें अपने दिलों में निश्चित करना है कि हम कैसे जीयेंगे। क्या हम इस तरह जीयेंगे कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें लज्जित कर सके और ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारे अन्दर के सुसमाचार को रोक सके? आज इस साहस की हमें अत्यधिक आवश्यकता है कि पवित्र आत्मा हमारी कलीसिया में इसे उत्पन्न करे। मैं चाहता हूँ कि हम प्रार्थना करें। मैं चाहता हूँ कि हम इसी पल अपने दिलों को मसीह, और सुसमाचार को दे दें।

परमेश्वर हमारी प्रार्थना है कि आप सुसमाचार को हमारे अस्तित्व की जड़ में, हमारे दिलों के केन्द्र में लेकर जाएँ, और हमारे दिलों को बदल दें। परमेश्वर, मेरी प्रार्थना है कि हम अपने दायित्व की गम्भीरता को समझें, इस सुसमाचार के कर्ज को समझें जो हमें चुकाना है। परमेश्वर यह समझने में हमारी सहायता करें कि परमेश्वर के सुसमाचार के लिए हमारे जीवनों को अलग किए जाने का क्या अर्थ है। जब हम इन सत्यों को देखते हैं, जब हम पौलुस के दिल को देखते हैं जो आपने उसे दिया, रोमियों 1 में पौलुस में मसीह के हृदय को, तो हमारी प्रार्थना है कि इस पल आप हमारे दिलों को लें, परमेश्वर, आप हमारे अपने आत्मिक जीवन की निर्धनता को भरें, परमेश्वर आप हमारे दिलों को यह कहने के लिए विवश करें, "मैं नहीं जानता यह कैसा होगा, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह कैसा होगा, क्योंकि मैं इस सुसमाचार को इस शहर के लोगों के साथ अपने प्रतिदिन के व्यवहार में बुनना चाहता हूँ। मैं सुसमाचार का सेवक बनना चाहता हूँ।" हमारी प्रार्थना है कि हमारे जीवनों में यीशु की भरपूरी हो। आमीन।